- डॉ. कुमारी सुजाता
- राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय
- अम्ब

हिंदी साहित्य का इतिहास

सामान्यतः इतिहास का अर्थ होता है अतीत की घटनाओं का कालक्रमानुसार वर्णन यह वर्णन व्यक्ति स्थान या वस्तु किसी का भी हो सकता है इसलिए साहित्य भी इतिहास से संबंध माना जा सकता है साहित्य के इतिहास में ऐतिहासिक दृष्टि से साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन किया जाता है

हिंदी साहित्य का इतिहास सर्वप्रथम फ्रांसीसी लेखक **गार्सा द तासी** ने फ्रेंच भाषा में लिखा था । **जॉर्ज ग्रियर्सन** ने द मॉडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर ऑफ नादन हिंदुस्तान नाम से इतिहास ग्रंथ लिखा जिसे हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास होने का गौरव प्राप्त है

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत हिंदी साहित्य का इतिहास हिंदी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास है विभिन्न प्रभावों एवं उसके फलस्वरूप उत्पन्न काव्य धाराओं का निरूपण करते हुए आचार्य शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन किया है यह काल विभाजन सर्वमान्य एवं सर्वप्रचलित है

काल विभाजन

जब तक हम किसी युग की प्रवृत्ति को परिस्थिति को नहीं जाएंगे तब तक हम उस युग के साहित्यकार का सम्यक मूल्याकंन नहीं कर पाएंगे जिस प्रकार वस्तु के समग्र रूप का दर्शन करने के लिए भी उसके अंगों का ही निरीक्षण करना पड़ता है ठीक उसी प्रकार साहित्य की अखंड परंपरा का अध्ययन करने के लिए काल विभाजन की आवश्यकता है

काल विभाजन का आधार समान प्रवृत्ति एवं प्रकृति होता है तथा युगों का नामकरण यथासंभव मूल साहित्य चेतना को आधार मानकर साहित्यिक प्रवृत्ति के अनुसार किया जाता है जिस काल–विशेष में जिस भावना–विशेष की प्रधानता रही है,उसी आधार पर ही इतिहासकारों ने उस काल नामकरण कर दिया। प्रखर मनीषी **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने सर्वप्रथम हिंदी साहित्य के इतिहास को चार कालखंडों में वैज्ञानिक विभाजन किया है–

1:–**आदिकाल या वीरगाथा काल** (संवत् 1050 से 1375 तक)

2:–**भक्तिकाल या पूर्वमध्य काल** (संवत् 1375 से 1700 तक)

3:–**रीतिकाल या उत्तर मध्य काल** (संवत् 1700 से 1900 तक)

4:–**आधुनिक काल या अद्यतन काल** (संवत् 1900 से अब तक)

नामकरण

आदिकाल या वीरगाथा काल (संवत् 1050 से 1375 तक)

जॉर्ज ग्रियर्सन – चारण काल मिश्र बंधु – प्रारम्भ काल

श्याम सुंदर ,डॉ. शुक्ला, डॉ विश्वनाथ, डॉ नागनाथ – वीरगाथा काल

हजारी प्रसाद द्विवेदी – आदिकाल महावीर प्रसाद द्विवेदी – बीजवपन काल

रामकुमारवर्मा – चारण काल राहुल सांस्कृत्यायन – सामंत काल

वास्तव में आदिकाल ही ऐसा नाम है जिसे किसी ना किसी रूप में सभी इतिहासकारों ने स्वीकार किया है इस नाम से उस व्यापक पृष्ठभूमि का बोध होता है जिस पर आगे साहित्य खड़ा है ।

आदिकाल की परिस्थितियां

1 राजनीतिक परिस्थितियां

- हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारतीय असंगठित सत्ता टूटने लगी हर्षवर्धन भारत का अंतिम साम्राज्य माना जाता है ।
- राजपूत राजाओं के आपसी युद्ध और वैमनस्य का फायदा मुस्लिम शासकों ने उठाया।
- कासिम ने भारत पर सफल आक्रमण किया यह अरबों का प्रथम आक्रमण था जिसका उद्देश्य धन लूटना व इस्लाम धर्म का प्रचार प्रसार करना था।
- मोहम्मद गजनी ने भारत पर लगभग 17 बार आक्रमण किए जिसमें उसने मथुरा कन्नौज ग्वालियर सौराष्ट्र बनारस आदि मंदिरों को लूटा सबसे चर्चित आक्रमण सौराष्ट्र का सोमनाथ मंदिर था।

- मोहम्मद गौरी एक कट्टर मुसलमान शासक था उसने पृथ्वीराज को पराजित किया और मुसलमानों का राज स्थापित किया ।
- इस काल का जीवन युद्ध से प्रभावित था इस युग में एक और जहां ऐसे लोग थे जो वीरता के साथ जीना चाहते थे तो दूसरी लोग ऐसे भी थे जो विनाश को देखकर संसारेत्तर बातें करते थे।

2 सामाजिक परिस्थितियां

- आठवीं शताब्दी से पंद्रहवी शताब्दी तक का समय हिंदू सत्ता का क्षय एवं इस्लाम सत्ता के धीरे–धीरे उदय होने की गाथा कहता है इस युग में जनता युद्धों एवं अत्याचारों से विशेषता आक्रांत हुई थी।
- जनता की स्थिति अत्यंत दयनीय थी वह शासन और धर्म दोनों से स्वयं को निराश्रित पा रही थी वास्तविकता यह थी कि दोनों ही जनता का शोषण कर रहे थे।

- समाज छोटी–छोटी जातियों व उपजातियों में विभक्त था समाज में अनेक रूढ़िवादी परंपरा पनप रही थी समाज में नारी की दशा अत्यंत सोचनीय तथा दयनीय थी वह मात्र भोग की वस्तु रह गई थी उसका क्रय विक्रय किया जा रहा था।
- सामान्य जन शिक्षा से वंचित था निर्धनता बढ़ती जा रही थी सती प्रथा का भयंकर अभिशाप था राजपूतों में आत्मसम्मान का स्वाभिमान था।
- नारी के कारण युद्ध हुआ करते थे राजाओं में बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी सामंती व्यवस्था से सामान्य जनता आक्रांत थी ।

3 धार्मिक परिस्थितियां

- सातवीं शताब्दी के साथ भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत से उत्तर भारत की ओर प्रारंभ हुआ।
- इस युग तक बौद्ध धर्म का प्रभाव समाप्त हो रहा था तो दूसरी और आलम्बार और नायम्बार संतों का उदय हुआ ।
- बौद्ध धर्म का प्रभाव कम होता चला गया तथा वैष्णव मत भी अधिक प्रतिष्ठित नहीं था अतः जनता में या तो जैनमत सम्मान पा रहा था या शैवमत ।
- अपनी शक्ति क्षीण होता देख बौद्ध धर्म रूप बदलकर सामने आया बौद्ध धर्म महायान शाखा के रूप में आया जिसमें तंत्र मंत्र जादू टोने ध्यान धारणा आदि का महत्व था अतः लोग इसे प्रभावित होकर जादू टोने के चक्कर में पड़ गए।
- जनता को कोई सही राह नहीं दिखा पा रहा था भ्रमित जनता को नई दिशा प्रदान करने के लिए शंकराचार्य रामानुजाचार्य आदि सामने आए।

4 सांस्कृतिक परिस्थितियां

- हर्षवर्धन के समय तक भारतीय संस्कृति अपने चरमोत्कर्ष पर थी उस समय तक स्वाधीनता तथा देशभक्ति के भाव दृढ़ थे।
- पारंपरिक संगीत मूर्तिकला चित्रकला स्थापत्य कला आदि ने प्रगति की।
- उस समय मंदिरों का निर्माण भी भव्य रूप में हुआ भुवनेश्वर सोमनाथ पुरी खजुराहो।
- प्रायः सभी कला में धार्मिक भावनाओं की छाप थी अलबरूनी ने हिंदुओं के मंदिर
- शैली की बड़ी प्रशंसा की है किंतु मुसलमानों ने इस कला पर कुठाराघात किया और मंदिरों को नष्ट करते गए।
- यवनों के आक्रमण से भारतीय संस्कृति का विघटन होने लगा हमारे त्यौहारो, मेलो, खान–पान, वेशभूषा ,विवाह आदि पर इस्लाम का गहरा प्रभाव पड़ता गया।

- कला के क्षेत्र में भी भारतीय परंपरा लुप्त होती गई।
- गायन वादन नृत्य आदि पर भी विदेशी संस्कृति का प्रभाव पड़ा।
- हिन्दू राजाओं ने भी विदेशी कलाकारों को श्रय प्रदान किया जिसके कारण धीरे–धीरे भारतीय संस्कृति लुप्त होती चली गई।
- मुसलमान मूर्ति विरोधी थे अतः मूर्तिकला का भी विकास समाप्त हो गया।

5 साहित्यिक परिस्थितियां

- इस काल में साहित्यिक परिस्थितियों का विशेष महत्व था और शांत वातावरण में भी इसमें निरंतर विकास किया।
- इस काल में ज्योतिष दर्शन आदि विषयों के अलावा हर्ष का नैषध चरित आदि जैसे कवियों की रचना हुई।

- संस्कृत में भी खूब रचनाएं लिखी गई इसके साथ ही प्राकृत एवं अपभ्रंश में भी प्रचुर मात्रा में श्रेष्ठ साहित्य रचा गया जैन व सिद्धो का साहित्य इसका प्रमाण है ।

- देश भाषा में भी साहित्य की रचना हुई साहित्य जनता की भावनाओं को मानसिक स्थितियों को व्यक्त करने का माध्यम बन गया था ।

- संस्कृत के कवि रचनात्मक प्रतिभा के उद्घाटन में तथा अपभ्रंश के कवि धर्म प्रचार में ही थे।

- इस काल में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा थी जो साहित्य के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियों को किसी रूप में उद्घाटित कर रही थी ।

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य के प्रथम काल का नाम सभी साहित्यकारों ने आदिकाल के रूप में स्वीकारा क्योंकि इस नाम से आदिकाल की राजनीतिक सामाजिक धार्मिक साहित्यिक पृष्ठभूमि या परिस्थितियों का बोध होता है। इस युग के साहित्य से तत्कालीन परिस्थितियों का यथार्थ बोध होता है। आदिकाल भाषा और साहित्य की दृष्टि से अत्यंत संपन्न काल है।

धन्यवाद